Timax®

# अलंकार

# हिंदी व्याकरण

## अध्यापक सहायक-पुस्तिका

NEP 2020
ENHANCED EDITION

6

# अलंकार हिंदी व्याकरण-6

## अभ्यास-1. भाषा और व्याकरण

**(क)** 1. बोली 2. व्याकरण 3. तीन 4. फ़ारसी **(ख)** 1. रोमन 2. गुरुमुखी 3. लिपि 4. हिंदी **(ग)** देवनागरी, रोमन, फारसी, गुरुमुखी, देवनागरी, चीनी **(घ)** 1. मौखिक भाषा, 2. लिखित भाषा 3. लिखित भाषा 4. सांकेतिक भाषा 5. मौखिक भाषा **(ङ)** **1.** अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर, लिखकर या पढ़कर प्रकट करने के साधन को भाषा कहते हैं; जैसे–हिंदी, उर्दू, गुजराती, मराठी आदि। **2.** (i) बोली किसी भाषा का ही अंग होती है। अतः भाषा में बोली के शब्द बड़ी मात्रा में आते हैं। (ii) बोली का क्षेत्र, भूमि तथा समाज दोनों में ही भाषा की तुलना में बहुत छोटा होता है। (iii) साहित्य में भाषा का प्रयोग ही प्रमुखतः होता है, बोली में साहित्य न के बराबर होता है। (iv) भाषा व्याकरण के नियमों का पालन करती है, बोली नहीं। (v) व्यक्ति या समाज बोली का प्रयोग अपने ही क्षेत्र में करते हैं, किंतु उस सीमित क्षेत्र से बाहर भाषा का ही प्रयोग होता है। **3.** भाषा की ध्वनियों को लिखकर प्रकट करने की विधि लिपि कहलाती है। **4.** भाषा के नियमों का शास्त्र व्याकरण कहलाता है। व्याकरण के तीन अंग हैं–वर्ण-विचार, शब्द-विचार और वाक्य-विचार।

## अभ्यास–2 वर्ण-विचार

**(क)** 1. क्ष 2. अयोगवाह 3. हाँ 4. बीच में **(ख)** 1. वर्ण 2. स्वरों 3. द्वित्व 4. अयोगवाह 5. स्पर्श **(ग)** 1. (✗) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗) **(घ)** 1. आँख 2. कंगन 3. नंदन 4. साँप 5. पाँच 6. मंजन **(ङ)** 1. स्+अ+म्+म्+आ+न्+अ 2. आ+श्+ई+र्+व्+आ+द्+अ 3. म्+अ+ह्+अ+ल्+अ 4. म्+आ+र्+म्+इ+क्+अ **(च)** 1. वर्ण 2. चम्मच 3. पकौड़ी 4. दवात **(छ)** आवाज़, फ़कीर, डॉक्टर, ज़रा, फ़र्क, डॉटर, ज़ख्म, फ़रसा, ऑफिस **(ज)** **1.** वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और खंड (टुकड़े) नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है। वर्णों के समूह को ही वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में 52 वर्ण हैं, जो इस प्रकार हैं-**स्वर**–अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ, **अयोगवाह**–अं अः, **व्यंजन**–क् ख् ग् घ् ङ्; च् छ् ज् झ् ञ्; ट् ठ् ड् ढ् ण्; त् थ् द् ध् न्; प् फ् ब् भ् म्; य् र् ल् व्; श् ष् स् ह्, **अतिरिक्त व्यंजन**–ड़् ढ़्, **संयुक्त व्यंजन**–क्ष् त्र् ज्ञ् श्र् **2. अनुनासिक**–जिन स्वरों का उच्चारण करते समय हवा मुख और नाक से निकलती है, वे अनुनासिक स्वर कहलाते हैं। इसका प्रयोग वर्णों के ऊपर चंद्रबिंदु ( ँ ) के रूप में किया जाता है; जैसे-माँद, काँच, चाँद, गूँज

आदि। **अनुस्वार**–जिन स्वरों को बोलते समय हवा केवल नाक से निकलती है, वे अनुस्वार कहलाते हैं। इसका प्रयोग वर्णों के ऊपर बिंदी ( ं ) के रूप में किया जाता है; जैसे-दंड, कंगन, गंगा आदि। **3.** (i) **ह्रस्व स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, अर्थात् जिन स्वरों की मात्रा एक (छोटी) होती है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं; जैसे-अ, इ, उ और ऋ। (ii) **दीर्घ स्वर**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगे अर्थात् जिनकी बड़ी मात्रा होती है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं; जैसे–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। इन्हें निम्न कारण से दीर्घ कहते हैं– अ + अ = आ, इ + इ = ई, उ + उ = ऊ, अ + इ = ए, अ + ए = ऐ, अ + उ = ओ, अ + ओ = औ (iii) **प्लुत स्वर**–इस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है। इसलिए इसके आगे तीन का अंक (३) लिख देते हैं। इस स्वर का प्रयोग हिंदी में केवल 'ओ३म्' शब्द में देखने को मिलता है। **4.** हिंदी के व्यंजनों की संख्या 35 है। इनके चार भेद हैं–(i) स्पर्श (ii) अंत:स्थ (iii) ऊष्म (iv) उत्क्षिप्त। (i) **स्पर्श**–'क्' से लेकर 'म्' तक के वर्ण 'स्पर्श व्यंजन' कहलाते हैं। सभी स्पर्श व्यंजन पाँच वर्गों के अंतर्गत आते हैं। प्रत्येक वर्ग का नाम पहले वर्ण के आधार पर रखा गया है–**कवर्ग** - क्, ख्, ग्, घ्, ङ्–कंठ, **चवर्ग** - च्, छ्, ज्, झ्, ञ– तालु, **टवर्ग** - ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्– मूर्धा, **तवर्ग** - त्, थ्, द्, ध्, न्– दंत, **पवर्ग** - प्, फ्, ब्, भ्, म्– ओष्ठ (ii) **अंत:स्थ**–ये स्वर और व्यंजनों के मध्य स्थित हैं। ये चार हैं-य्, र्, ल्, व्। (iii) **ऊष्म**-इनके उच्चारण में मुँह से गर्म श्वास निकलती है। ये चार हैं–श्, ष्, स्, ह्। (iv) **उत्क्षिप्त**–ये दो हैं–ड़्, ढ़्। ये क्रमश: ड व ढ के नीचे बिंदु लगाने से बने हैं। **5. द्वित्व व्यंजन**–जब एक वर्ण दो बार मिलता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं; जैसे–**बच्चा** (च्+च=च्च), **कुत्ता** (त्+त=त्त), **गन्ना** (न्+न=न्न) **संयुक्त व्यंजन**–एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में चार मुख्य संयुक्त व्यंजन निम्नलिखित हैं–क् + ष = क्ष–कक्षा, रक्षा, ज् + ञ = ज्ञ–ज्ञान, अज्ञानी, त् + र = त्र–पत्र, मित्र, श् + र = श्र–श्रम, श्रमिक, **6.** वर्णों के परस्पर मेल को वर्ण-संयोग कहते हैं।

## अभ्यास–3 शब्द-विचार

**( क )** 1. तत्सम शब्द 2. तद्भव 3. स्कूल 4. रात्रि **( ख )** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓) **( ग )** 1. अर्थ 2. निरर्थक 3. देशज 4. यौगिक 5. यौगिक **( घ ) तत्सम**–कर्म, दंत, निद्रा, **तद्भव**–रात, नाच, माता, गाँव, **देशज**–कुआँ, रोटी,

डलिया, थैला, थाली, **विदेशी**–चश्मा, रेल, इनाम, बाज़ार **(ङ) तद्भव**–अंधेरा, आँख, हाथ, घड़ा, बाल, कमर, सच, भाई, मुँह, आम **(च) 1.** वर्णों के सार्थक समूह को, जिसका निश्चित अर्थ होता है, शब्द कहते हैं। **2.** रचना के आधार पर हिंदी भाषा के शब्दों के तीन भेद किए जाते हैं-(i) रूढ़ (ii) यौगिक (iii) योगरूढ़। **(i) रूढ़ शब्द**–रूढ़ शब्द परंपरा से चले आ रहे हैं। ये वे शब्द हैं, जिनका एक निश्चित अर्थ होता है। इन शब्दों के खंड नहीं किए जा सकते; जैसे-घर, तालाब, केला। यदि रूढ़ शब्दों के खंड किए जाएँ, तो उनका कोई अर्थ नहीं रहता। जैसे-घर (घ + र), केला (के + ला), तालाब (ता + ला + ब) **(ii) यौगिक शब्द**–ऐसे शब्द जो एक से अधिक सार्थक खंडों से मिलकर बने हों, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे-विद्यालय (विद्या + आलय), विज्ञान (वि + ज्ञान) आदि। **(iii) योगरूढ़ शब्द**–ऐसे शब्द, जो यौगिक होने के साथ ही किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हों, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे-जलज (जल + ज) 'ज' का अर्थ है 'उत्पन्न हुआ'। इस आधार पर जल में उत्पन्न प्रत्येक वस्तु जलज नहीं कहलाती। यह शब्द 'कमल' के लिए रूढ़ हो गया है। जलद (बादल), दशानन (रावण), नीलकंठ (शिव), लंबोदर (गणेश) आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। **3.** (i) **तत्सम शब्द**–संस्कृत के वे शब्द, जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में उनके मूल रूप में ही किया जाता है, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे-रात्रि, कूप, उज्ज्वल, श्वेत आदि। (ii) **तद्भव शब्द**–संस्कृत के जो शब्द कुछ रूप-परिवर्तन के साथ हिंदी में आए हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं; जैसे-रात (संस्कृत शब्द 'रात्रि'), कुआँ (संस्कृत शब्द 'कूप'), उजाला (संस्कृत शब्द 'उज्ज्वल'), सफ़ेद (संस्कृत शब्द 'श्वेत') आदि। **4. देशज शब्द**-जो शब्द किसी भी भाषा से नहीं आए, बल्कि हिंदी में ही बना लिए गए हैं, वे देशज शब्द कहलाते हैं; जैसे-रोटी, थैला, पगड़ी, गाड़ी आदि। **विदेशी शब्द**-विदेशी भाषाओं के कुछ शब्द हिंदी में प्रयोग किए जाने लगे हैं। ऐसे शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है; जैसे-हॉल, स्कूल, रेडियो, अमीर, दुकान, इनाम, कुरता आदि। **5. (i) सार्थक शब्द**-जिन शब्दों से कुछ अर्थ निकलता हो, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं; जैसे-खाना, छाता, लड़का आदि। **(ii) निरर्थक शब्द**-जिन शब्दों से कुछ अर्थ नहीं निकलता, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं; जैसे-वाना, वाता, वड़का आदि। **6. यौगिक शब्द**–ऐसे शब्द जो एक से अधिक सार्थक खंडों से मिलकर बने हों, यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे-विद्यालय (विद्या + आलय), विज्ञान (वि + ज्ञान) आदि। **योगरूढ़ शब्द**–ऐसे शब्द, जो यौगिक होने के साथ ही किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हों, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे-जलज (जल + ज)

'ज' का अर्थ है 'उत्पन्न हुआ'। इस आधार पर जल में उत्पन्न प्रत्येक वस्तु जलज नहीं कहलाती। यह शब्द 'कमल' के लिए रूढ़ हो गया है। जलद (बादल), दशानन (रावण), नीलकंठ (शिव), लंबोदर (गणेश) आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। **7. मिश्रित शब्द**-जिन शब्दों का आधा भाग एक भाषा से तथा आधा भाग दूसरी भाषा से बना हो, उन्हें मिश्रित या संकर शब्द कहा जाता है; जैसे-घड़ीसाज़ = घड़ी (हिंदी) + साज़ (अरबी), टिकटघर = टिकट (अंग्रेज़ी) + घर (हिंदी), रेलगाड़ी=रेल (अंग्रेज़ी) + गाड़ी (हिंदी) आदि।

## अभ्यास–4 उपसर्ग

**(क)** 1. शब्दांश 2. से पहले 3. अति 4. सु 5. प्रति **(ख) मूल शब्द**–अक्ल, जय, धान, गुण, पूत, **उपसर्ग**–कम, परा, प्र, अव, स **(ग)** स्वयं करें **(घ) उपसर्ग**–1. अध 2. निः 3. उप 4. दुः 5. अप 6. अ 7. सु 8. अति, **मूल शब्द**–1. पका 2. बल 3. योग 4. कर्म 5. मान 6. सत्य 7. योग 8. अंत **(ङ) 1.** जो शब्दांश मूल शब्दों से पहले जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे-

| **उपसर्ग** | **मूल शब्द** | **उदाहरण** |
|---|---|---|
| (i) अ, वि | ज्ञान | अज्ञान, विज्ञान |
| (ii) आ, प्र | दान | आदान, प्रदान |
| **2. उपसर्ग** | **अर्थ** | **उदाहरण** |
| (i) आ | तक | आगमन, आजीवन, आजन्म, आदेश |
| (ii) उप | समान, निकट | उपनाम, उपयोग, उपमंत्री, उपभोग |
| (iii) दुस् | बुरा | दुस्साहस, दुष्कर्म, दुश्चरित्र, दुश्शासन |
| **3. उपसर्ग** | **अर्थ** | **उदाहरण** |
| (i) अध | आधा | अधपका, अधजला, अधमरा |
| (ii) अन | बिना, रहित | अनपढ़, अनहोनी, अनजान, अनमोल |
| (iii) नि | रहित | निडर, निहत्था, निकम्मा, निपूता |
| **4. उपसर्ग** | **अर्थ** | **उदाहरण** |
| (i) कम | हीन, थोड़ा | कमउम्र, कमज़ोर, कमअक्ल, कमतर |
| (ii) खुश | अच्छा | खुशबू, खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशगवार |
| (iii) ना | नहीं | नासमझ, नालायक, नापसंद, नादान |

## अभ्यास–5 प्रत्यय

**( क )** 1. अंत में 2. दो 3. आकू 4. वान **( ख )** 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✗) **( ग )** स्वयं करें **( घ ) मूल शब्द**–इतिहास, दया, घबरा, पढ़ा, इंद्रा **प्रत्यय**–इक, आलु, आहट, ई, आणी **( ङ ) नए शब्द**–गैया, बिछौना, ठंडा, मिलाप, छतरी, नागपुरिया **( च )** जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे-दूध + वाला = दूधवाला, हँस + ई = हँसी 2. **कृत् प्रत्यय**–जो शब्दांश क्रिया के धातु रूप से जुड़ते हैं तथा संज्ञा या विशेषण बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं; जैसे-थकावट, बनावट, लिखावट, बचाव, कटाव; **तद्धित प्रत्यय**–जो शब्दांश संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय आदि के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–गोरापन, कालापन, बचपन, रक्षित, क्रोधित, शोभित

## अभ्यास–6 समास

**( क )** 1. सामासिक पद 2. तत्पुरुष समास 3. द्वंद्व समास 4. द्विगु 5. द्वंद्व समास **( ख ) समास-विग्रह**–1. सुबह और शाम 2. पाँच वटों का समाहार 3. शक्ति के अनुसार 4. देश की भक्ति 5. कमल के समान नयन 6. नीला है कंठ जिसका 7. दस हैं आँखें जिसकी **समास का नाम**–1. द्वंद्व 2. द्विगु 3. अव्ययीभाव 4. तत्पुरुष 5. कर्मधारय 6. बहुब्रीहि 7. बहुब्रीहि **( ग )** 1. बहुब्रीहि 2. अव्ययीभाव 3. द्वंद्व 4. कर्मधारय 5. द्विगु **( घ ) समस्त पद**–1. भूकंप पीड़ित 2. भला-बुरा 3. नौरात्रि 4. गृह-प्रवेश 5. लंबोदर, **समास**–1. तत्पुरुष 2. द्वंद्व 3. द्विगु 4. अव्ययीभाव 5. बहुब्रीहि **( ङ ) समास-विग्रह**–वन को गमन, रसोई के लिए घर, जन्म से लेकर **कारक**–तत्पुरुष, तत्पुरुष, अव्ययीभाव **( च )** 1. दो या दो से अधिक शब्दों के समूह से एक संक्षिप्त शब्द बनाना समास कहलाता है। 2. शब्द समूह के संक्षिप्त रूप को समस्त पद कहते हैं। समास पद को अलग-अलग करके लिखने को समास-विग्रह कहते हैं।

## अभ्यास–7 संधि

**( क )** 1. राजेन्द्र 2. सूर्योदय 3. महेंद्र 4. देवर्षि 5. महोदय 6. एकैक **( ख )** 1. विद्या + आलय 2. महा + ऐश्वर्य 3. महा + ऋषि 4. सुर + इंद्र 5. शची + इंद्र 6. तत् + छाया **( ग ) इंद्र**–रवींद्र, नरेन्द्र, महेंद्र, मुनीन्द्र, **निः**–निर्बल, निर्जन, निराशा, निर्धन **( घ ) 1.** दो वर्णों के मेल से जो विकारयुक्त परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते

हैं; जैसे-गण + ईश = गणेश। संधि तीन प्रकार की होती है-1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि और 3. विसर्ग संधि **2.** स्वर और स्वर के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, वह स्वर संधि कहलाता है। जैसे–भाव + अर्थ = भावार्थ, स्व + अधीन = स्वाधीन **3.** व्यंजन से स्वर या व्यंजन के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। **4.** विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, वह विसर्ग संधि कहलाती है। जैसे–पयः + धर = पयोधर, यशः + दा = यशोदा।

## अभ्यास–8 शब्द-भंडार

स्वयं करें।

## अभ्यास–9 संज्ञा

**(क)** 1. पाँच 2. जातिवाचक संज्ञा 3. ताजमहल 4. द्रव्यवाचक संज्ञा **(ख)** 1. संज्ञा 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा 4. समूहवाचक संज्ञा 5. जातिवाचक संज्ञा **(ग)** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗) **(घ)** 1. अपनत्व 2. बचपन 3. दूरी 4. बुढ़ापा 5. सर्वस्व 6. अहंकार **(ङ) 1.** किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। **2.** संज्ञा के पाँच प्रकार माने जाते हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा 4. द्रव्यवाचक संज्ञा 5. समूहवाचक संज्ञा **3. जातिवाचक संज्ञा**–जिस शब्द से किसी वर्ग के सभी प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–लड़का, आदमी, शेर, पुस्तक, नदी, पहाड़, नगर, देश आदि। **व्यक्तिवाचक संज्ञा**–जिस शब्द से से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- विवेक, रमा, गंगा, हरिद्वार, मेरठ, जवाहरलाल नेहरू, रामायण, लाल किला, ताजमहल, त्रिवेंद्रम, लखनऊ, दिल्ली आदि। **4. भाववाचक संज्ञा**–जिस शब्द से किसी भाव, गुण, अवस्था आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-यौवन, बचपन, प्रेम, दया, क्रोध, सुंदरता, बुढ़ापा आदि। **5. द्रव्यवाचक संज्ञा**–जो शब्द किसी द्रव्य, धातु आदि का बोध कराते हैं, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-लोहा, सोना, चाँदी, पानी, तेल, दूध, घी, गेहूँ, चावल, पनीर आदि। **6.** जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनती है।

## अभ्यास–10 लिंग

**( क )** 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग 5. आँख **( ख )** 1. दो 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. नित्य स्त्रीलिंग 5. नित्य पुल्लिंग **( ग )** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✗) **( घ )** 1. कवयित्री 2. मालिन 3. विदुषी 4. हथिनी 5. अभिनेत्री 6. युवति **( ङ )**

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| बालक | बालिका | सेठ | सेठानी | गायक | गायिका |
| पुत्र | पुत्री | श्रीमान | श्रीमती | कवि | कवयित्री |
| वर | वधू | विद्वान | विदुषी | पति | पत्नी |
| लड़का | लड़की | डिब्बा | डिबिया | प्राचार्य | प्राचार्या |
| गुणवान | गुणवती | सिंह | सिंहनी | क्षत्रिय | क्षत्राणी |
| संपादक | संपादिका | भील | भीलनी | विधुर | विधवा |
| सम्राट | साम्राज्ञी | पुरुष | स्त्री | ग्वाला | ग्वालिन |

**( च )**

| स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| घोड़ी | घोड़ा | वृद्धा | वृद्ध | सुता | सुत |
| बबुआइन | बाबू | देवी | देव | भवदीया | भवदीय |
| बाला | बाल | प्रिया | प्रिया | लुटिया | लोटा |
| धोबिन | धोबी | तेलिन | तेली | धनवती | धनवान |

**( छ )** 1. शब्द के जिस रूप से संज्ञा या सर्वनाम के स्त्री जाति या पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। **2. पुल्लिंग**–जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–शेर दौड़ रहा है। **स्त्रीलिंग**–जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे–शेरनी दौड़ रही है। **3. कुछ नित्य पुल्लिंग शब्द**–मच्छर, तोता, खटमल, भालू, **कुछ नित्य स्त्रीलिंग शब्द**–मक्खी, मकड़ी, मछली, कोयल।

## अभ्यास–11 वचन

**( क )** 1. महिलाएँ 2. चिड़ियाँ 3. सभाएँ 4. आप **( ख )** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✓) **( ग )** नदी, बहू, कुर्सी, कमरा, सड़क, लू, डिब्बा, जाति, बच्चा **( घ )** गाएं, लताएँ, गधे, वस्तुएँ, अध्यापिकाएँ, आँखें, महिलाएँ, गुड़ियाँ, बहनें, कौए, धेनुएँ, लड़के **( ङ ) सदा एकवचन में प्रयोग होने वाले शब्द**–वर्षा, घी, आग, आकाश, **सदा बहुवचन में प्रयोग होने वाले शब्द**–आँसू, बाल, होश, जनता, लोग, दर्शन **( च )** 1. एक या अनेक का बोध कराने वाले शब्द वचन कहलाते हैं। **2. एकवचन**–शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते

हैं; जैसे-रवि सेब दिखा रहा है। लड़की हँस रही है। **बहुवचन**–शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे-लड़कियाँ हँस रही हैं। कुत्ते भौंक रहे हैं। **3.** (i). अंतिम 'आ' का 'ए' करके–**एकवचन**–कमरा, घोड़ा **बहुवचन**–कमरे, घोड़े (ii) अंत में 'याँ' जोड़कर–**एकवचन**–लिपि, नीति **बहुवचन**–लिपियाँ, नीतियाँ (iii). अंतिम 'या' का 'याँ' करके–**एकवचन**–कुतिया, चिड़िया **बहुवचन**–कुतियाँ, चिड़ियाँ (iv) अंत में 'एँ' जोड़कर–**एकवचन**–लता, माला **बहुवचन**–लताएँ, मालाएँ (v) अंतिम 'ई' का 'इयाँ' करके–**एकवचन**–खिड़की, लड़की **बहुवचन**–खिड़कियाँ, लड़कियाँ।

## अभ्यास–12 कारक

**( क )** 1. कर्ता कारक का 2. करण 3. आठ 4. कर्ता **( ख )** 1. में 2. से 3. की 4. की 5. के लिए **( ग )** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗) **( घ ) 1.** वाक्य में पदों का क्रिया से संबंध कारक कहलाता है। **2. कर्म कारक**–वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द पर क्रिया के कार्य का फल या प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे–(क) गीता ने नेहा को पुस्तक दी। (ख) मैंने रवि को बल्ले दिए। **3. संप्रदान कारक**–संप्रदान का अर्थ है- किसी को कुछ देना या किसी के लिए कुछ करना। जिस संज्ञा या सर्वनाम के लिए कुछ किया जाता है या उसे दिया जाता है, वह संप्रदान कारक होता है। संप्रदान कारक में 'को, के लिए' परसर्गों का प्रयोग होता है, जैसे–(क) बच्चे के लिए फल लाओ। (ख) गरीबों को भोजन दो। **4. करण कारक**–क्रिया करने का साधन या माध्यम करण कारक होता है। करण कारक के साथ से/ के द्वारा परसर्ग लगाया जाता है; जैसे–(i) नेहा कार से गाँव गई। (ii) मंत्री जी रेल के द्वारा मुंबई पहुँचे। **अपकरण कारक**-संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते है; जैसे–(i) पेड़ से पत्ते झड़ने लगे। (ii) वह छत से कूद गया। **5. अधिकरण कारक**–क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है। वाक्य में जो शब्द क्रिया का आधार बता रहा हो, वह अधिकरण कारक में होता है। अधिकरण कारक के साथ में/पर परसर्ग लगाए जाते हैं; जैसे–(क) कमरे में कुर्सियाँ हैं। (ख) मेज़ पर पुस्तक है।

## अभ्यास–13 सर्वनाम

**( क )** 1. क्या 2. यह 3. मैं 4. कौन 5. छह **( ख )** 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓) **( ग )** 1. उसने 2. मुझे 3. किसका 4. किसके 5. किसकी **( घ ) 1.**

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। **सर्वनाम के छह भेद हैं**–(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) प्रश्नवाचक सर्वनाम (5) संबंधवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम **2.** जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे **सर्वनाम** कहलाते हैं; जैसे- मैं, वह, तुम, कौन, कोई, जो, किससे आदि। **3.** पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं–**(क) उत्तम पुरुष**–बोलने वाला या लिखने वाला अपने नाम के बदले जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, हम आदि। **(ख) मध्यम पुरुष**–जिससे बात की जाए या जिसे संबोधित किया जाए, उसके नाम के बदले प्रयुक्त सर्वनाम को मध्यम पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे- तू, तुम, आप। **(ग) अन्य पुरुष**–जिसके बारे में बात करते हैं या लिखते हैं, उसके नाम के बदले प्रयुक्त सर्वनाम को अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे- वह, वे, यह, ये। **4. प्रश्नवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम हैं, जिनका प्रयोग किसी व्यक्ति या वस्तु के संबंध में प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है; जैसे- कौन, क्या, किसने, किससे आदि। **निश्चयवाचक सर्वनाम**–वे सर्वनाम जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर समीप या दूर से संकेत करते हैं; जैसे-यह, वह। **5. निजवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम कर्ता के निजत्व (अपनेपन) के लिए प्रयोग होते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे-(क) मैं स्वयं घर पहुँच जाऊँगा। (ख) वह आप पढ़ेगा। **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**–जो सर्वनाम किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयुक्त होते हैं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे-(क) कोई दरवाज़े पर है। (ख) दाल में कुछ पड़ा है।

## अभ्यास–14 विशेषण

**(क)** 1. सार्वनामिक विशेषण 2. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण 3. रुपए 4. निश्चित संख्यावाचक विशेषण 5. अधिकतम **(ख)** 1. पाँच 2. विशेष्य 3. प्रविशेषण 4. तीन 5. संकेतवाचक **(ग)** स्वयं करें **(घ) विशेषण**–बहुत बड़ा, महान, रोचक, रुपए, चाय। **प्रविशेषण**–बहुत, अत्यंत, अति, कुछ अधिक, ज्यादा गर्म **(ङ) 1.** संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द **विशेषण** कहलाते हैं। **2.** जिन विशेषण शब्दों से किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण-दोष, आकार-प्रकार, रूप-रंग और स्थिति-दशा का बोध हो, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। **3.** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के परिमाण अर्थात् माप-तोल

का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। **4.** व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बने विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–बनारसी साड़ी, जापानी घड़ी, पंजाबी नृत्य आदि।

## अभ्यास–15 क्रिया

**( क )** 1. दो 2. धातु 3. क्रिया को करने वाला 4. कर्म पर 5. सकर्मक **( ख )** 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓) **( ग )** स्वयं करें **( घ )** क्रिया शब्द–पढ़ना, पढ़ाई, पढ़ो; लिखना, लिखाई, लिखो; चलना, चलाई, चलो, खाना, खिलवाना, खिलाओ; जाना, जाएगा, जाओ; देखना, देखो, दिखाओ **( ङ )** 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक 5. सकर्मक **( च ) कर्ता**–1. सेठ 2. माताजी 3. लड़के 4. डॉक्टर 5. हम। **कर्म**–1. कंबल 2. खाना 3. क्रिकेट 4. रोगी 5. मेला। **क्रिया**–1. दान किए 2. बना रही हैं 3. खेल रहे हैं 4. दवा दी 5. देखने गए। **( छ )** **1.** जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे–उठना, सोना, हँसना, पढ़ना, खाना। **2. सकर्मक क्रिया**–जिन क्रियाओं के साथ कर्म होता है, वे सकर्मक क्रिया होती हैं। इनमें क्रिया के कार्य का प्रभाव कर्ता की जगह कर्म पर पड़ता है। ये क्रियाएँ हैं–पढ़ना, बनाना, सुनाना, बुलाना, दिखाना, लिखना, कहना आदि। **अकर्मक क्रिया**–जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं होती, वह अकर्मक क्रिया होती है। इनमें क्रियाओं का सीधा प्रभाव कर्ता पर पड़ता है। ये क्रियाएँ हैं–हँसना, दौड़ना, रोना, सोना, बैठना। **3. नामधातु क्रिया**–संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण आदि शब्दों से बने क्रियापद नामधातु क्रिया कहलाते हैं; जैसे- (क) संज्ञा शब्दों से- हाथ (हथियाना), बात (बतियाना), गाँठ (गठियाना), शर्म (शर्माना) आदि। (ख) सर्वनाम शब्दों से- अपना (अपनापन)। **प्रेरणार्थक क्रिया**–जिस क्रिया से यह पता चले, कि कर्ता स्वयं क्रिया न करके किसी अन्य को उस कार्य को करने की प्रेरणा दे रहा है, वह प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है; जैसे-(क) माता ने पुत्र से चित्र बनवाया। (ख) रमन ने नौकर से सामान मँगवाया। **4. एककर्मक क्रिया**–जिन सकर्मक क्रियाओं में एक कर्म होता है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे- (क) रवि ने कविता सुनाई। (ख) नेहा ने चित्र बनाया। (ग) रजत ने खाना खाया। **द्विकर्मक क्रिया**–जिन सकर्मक क्रियाओं में दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे-(क) सेठजी गरीबों को धन दे रहे थे। (ख) नेहा सुनीता को पुस्तक पढ़ा रही थी। **5. संयुक्त क्रिया**–जहाँ वाक्य में प्रयुक्त एक से अधिक धातुओं

से बने क्रियापद हों, वे संयुक्त क्रिया कहलाते हैं। **पूर्वकालिक क्रिया**–वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले होने वाली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

## अभ्यास–16 काल

**(क)** 1. तीन 2. वर्तमान काल 3. अपूर्ण भूतकाल का 4. सामान्य वर्तमान काल का **(ख)** 1. क्रिया 2. भूल 3. छः 4. तीन **(ग)** 1. हेतुहेतुमद् भूत 2. अपूर्ण भूत 3. सामान्य वर्तमान 4. पूर्ण भूत 5. सामान्य भविष्यत् **(घ)** 1. भविष्यत् 2. वर्तमान 3. भूतकाल 4. भूतकाल 5. भूतकाल **(ङ)** **1.** क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं। **2.** (i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल (iii) भविष्यत् काल **3.** क्रिया के जिस रूप से यह पता चले, कि कार्य बीते हुए समय में हुआ था। उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे–(i) रवि ने गीत सुनाया। (ii) राहुल बाजार जा रहा था। **4.** क्रिया के जिस रूप से यह पता चले, कि कार्य अभी हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–(क) बच्चे गाना गा रहे हैं। (ख) माताजी बाज़ार जा रही हैं। **5.** कार्य के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य आने वाले समय में होगा, उसे भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे–(क) हम मेला देखने जाएँगे। (ख) राहुल अपना पाठ याद करेगा।

## अभ्यास–17 वाच्य

**(क)** 1. कर्तृ वाच्य 2. कर्म 3. भाव वाच्य 4. वचन **(ख)** 1. भाव वाच्य 2. कर्तृ वाच्य 3. भाववाच्य **(ग)** 1. लड़का से चित्र बनाया जाता है। 2. माली से बगीचे में पौधा लगाया जाता है। 3. मीना से कविता पढ़ी जाती है। **(घ)** 1. शेर से दहाड़ा नही जाता। 2. लड़की से सोया नहीं जाता। 3. बूढ़े व्यक्ति से चला नहीं जाता। **(ङ)** **1.** क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो, कि उसके लिंग तथा वचन का प्रयोग कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार किया गया है, उसे वाच्य कहते हैं। हिंदी में तीन वाच्य होते हैं–1. कर्तृ वाच्य 2. कर्म वाच्य 3. भाव वाच्य। **2.** जब क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार होता है, तो उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं; जैसे–(क) रवि कविता लिखता है। (ख) महिला सब्ज़ी खरीदती है। **3. कर्म वाच्य**–वाक्य में जब क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार न होकर, कर्म के अनुसार होता है, तो उसे कर्म वाच्य कहते हैं; जैसे–(क) रवि से पुस्तक पढ़ी जाती है। (ख) माताजी से खाना बनाया जाता है। **भाव वाच्य**–वाक्य में जब क्रिया का रूप कर्ता और कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होता है, तो उसे भाव वाच्य कहते हैं; जैसे–(क) रमन से खेला नहीं जाता। (ख) मनीषा से गाना गाया नहीं जाता।

## अभ्यास–18 अविकारी शब्द

**(क)** 1. कल 2. धीरे-धीरे 3. अंदर 4. कल **(ख)** 1. संयोजक 2. विकल्पसूचक 3. विकल्पसूचक 4. परिणामदर्शक 5. परिणामदर्शक **(ग)** किंतु, तथा, या, अथवा, परंतु, इसलिए, अन्यथा **(घ)** 1. के अंदर 2. के सामने 3. के बिना 4. के पीछे **(ङ)** हर्षबोधक, शोकबोधक, क्रोधबोधक, अनुमोदनबोधक, घृणाबोधक, हर्षबोधक **(च)** 1. **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**–जो शब्द क्रिया की मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–(क) कुछ काम करो। (ख) थोड़ा बोलो, अधिक पढ़ो। **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**–जो शब्द क्रिया की रीति अर्थात् 'होने का ढंग' बताएँ, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–(क) मनीष तेज़ चलता है। (ख) वह अचानक चला गया। **2.** दो शब्दों, वाक्यों या उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्दों को समुच्चयबोधक या योजक कहते हैं। समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं–1. समानाधिकरण 2. व्यधिकरण। **3.** जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जुड़कर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं। **4.** वाक्य में प्रयुक्त जिन शब्दों के द्वारा हर्ष, क्रोध, घृणा, शोक, आश्चर्य आदि के भाव प्रकट हों, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं।

## अभ्यास–19 वाक्य

**(क)** 1. सरल 2. विधानवाचक 3. संदेहवाचक 4. निषेधात्मक 5. दो **(ख)** 1. कर्ता 2. विधेय 3. उद्देश्य 4. आठ **(ग)** **उद्देश्य**–1. नेहा 2. रमेश का भाई 3. सूर्य 4. चंद्रमा 5. छात्र **विधेय**–1. गीत गा रही है। 2. खिलाड़ी है। 3. पश्चिम दिशा में छिपता है। 4. गोल है। 5. कक्षा में पढ़ रहे हैं। **(घ)** स्वयं करें **(ङ)** **1.** शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं; जैसे–कमल का फूल हमारा राष्ट्रीय पुष्प है। **2.** अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं **3. संयुक्त वाक्य**– जिस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य स्वतंत्र रूप से समुच्चय-बोधक द्वारा जुड़ें हों, उसे संयुक्त वाक्य कहा जाता है; जैसे–(i) विनीता खाना बना रही है और रीना परोस रही है। (ii) मोहन खेल रहा है, परंतु नीरज पढ़ रहा है। **मिश्रित वाक्य**– जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य तथा अन्य वाक्य आश्रित या गौण हों, वह मिश्रित वाक्य कहलाता है; जैसे–ऐसा प्रतीत होता है, कि आज बारिश आएगी। **4.** जिस वाक्य से आज्ञा, आदेश, सलाह या विनय का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे–(i) वहाँ मत खेलो। (ii) क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? (iii) परिश्रम से कार्य करना चाहिए।

**5.** वाक्य में जिसके बारे में बताया जाता है, वह उद्देश्य होता है। उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं।

## अभ्यास–20 विराम-चिह्न

**(क)** स्वयं करें **(ख)** स्वयं करें **(ग) 1.** वाक्य की समाप्ति पर पूर्णविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे–वह अपने गाँव जा रहा है। **2.** पूर्ण विराम से कुछ कम देर तक रुकने के लिए अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे–ठंडी हवा चल रही थी; पक्षी चहचहा रहे थे। **3.** वह रात-दिन परिश्रम करता है। प्रो० आर० के० गुप्ता हमारे पड़ोसी हैं। **4.** जहाँ किसी बात को अलग करके दिखाना हो, वहाँ उपविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे–वाक्य के दो अंग होते हैं: (क) उद्देश्य, (ख) विधेय

## अभ्यास–21 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

**(क)** 1. एकमात्र सहारा होना 2. धोखा देना 3. नष्ट करना 4. रुकावट पैदा करना 5. मार देना **(ख)** 1. का बैगन होना 2. छुड़ाना 3. भरना 4. की लाठी होना 5. का चाँद होना 6. नमक का भाव मालूम पड़ना 7. में सागर होना 8. दो ग्यारह होना (ग) मूर्ख व्यक्ति, बहुत शर्मिंदा होना, खुशामद करना, बहुत दुख होना, कठिन काम **(घ)** स्वयं करें। **(ङ) 1.** 'मुहावरा' अरबी भाषा का शब्द है इसका अर्थ है– 'बातचीत' या 'अभ्यास'। **2.** लोकोक्ति शब्द 'लोकउक्ति' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है–लोक में प्रचलित बात। लोकोक्ति को कहावत भी कहा जाता है। लोक जीवन में हुए अनुभव लोकोक्ति का रूप ले लेते हैं। **3.** मुहावरा वाक्य का हिस्सा या अंग है, जबकि लोकोक्ति स्वतंत्र वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है। वाक्य का अंग होने के कारण कर्ता और कर्म के लिंग, वचन तथा क्रिया, काल व वाच्य आदि का प्रभाव मुहावरे पर पड़ता है। परंतु स्वतंत्र वाक्य होने के कारण लोकोक्ति पर कर्ता और कर्म के लिंग, वचन आदि का प्रभाव नहीं पड़ता।

### खंड 'ख' : रचना–

स्वयं करें।

# अलंकार हिंदी व्याकरण

**Interactive Resources**

- Download the free app 'Green Book House' from google play.
- Free online support available on 'www.greenbookhouse.com'.
- Ample teacher's support available.

**GREEN BOOK HOUSE**
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com